मंथन के मोती

सुलेखा समिति की प्रथम राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता " महिलाओं की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो " ने सफलता के नए कीर्तिमान बनाएं | ये सफलता राष्ट्रीय नेतृत्व, सुलेखा सदस्यों व सभी प्रदेश पदाधिकारियों की संगठन के प्रति समर्पित सदभावना का परिणाम है |

सताईस प्रदेशों से इक्यासी निबंध आये | सभी प्रतियोगियों ने अच्छा प्रयास किया | वे महिलाएं जो घर गृहस्थी में रमी हुई हैं और घर की चार दीवारी को ही अपनी दुनिया मान कर उसी में ख़ुशी का अनुभव करती हैं, उनके द्वारा अपने विचारों को अभिव्यक्त करना और दृढ़ता से सबके सम्मुख रखना सच मुच प्रसन्नता का विषय है | धीरे धीरे ही सही इन प्रयासों से जन जागृति तो आएगी ही | इन सभी निबंधों को पढ़ने के बाद कुछ बातें ऐसी थीं जिन्हे मैं आपके साथ बाँटना चाहूंगी |

प्रत्येक निबंध में सभी ने एक बात लिखी कि पढ़ाई पर विशेष ज़ोर दिया जाना चाहिए | पौराणिक, ऐतिहासिक महिला चरित्रों से आज की नारी की तुलना अधिकाँश ने की | मुग़ल अत्याचारों को सर्व सम्मति से आज की नारी की दुर्दशा का व समाज में फैली घूँघट प्रथा जैसी कुरीति का एक बड़ा कारण भी माना | गर्भावस्था में स्वस्थ साहित्य का पठन पाठन होना चाहिए जिससे गर्भस्थ शिशु पर अच्छे संस्कार पड़ें यह विषय दो चार सदस्यों ने ही लिखा पर बहुत अच्छा लिखा |

कंप्यूटर शिक्षा के लिए सभी एक मत्त थे | टेक्नोलॉजी के युग में प्रगति के साथ कदम ताल करने के लिए इंटरनेट का उपयोग करने के लिए भी कई सदस्यों ने लिखा | आत्म रक्षा हेतु जुडो कराटे जैसे उपाय भी बालिकाओं को सिखाये जाएं इस पर भी चर्चा थी | महिला सम्बन्धी स्वास्थ्य समस्याओं की भी जानकारी और उनका निदान हो सके इसके लिए कार्यक्रम आयोजित किये जाने पर भी बल दिया गया |

एक बात सभी लेखों में थी की शिक्षा ऐसी हो जो घर और ऑफिस में सामंजस्य बिठा सके | महिलाओं को अपने पैरों पे खड़ा कर सके जिस से आपात काल में वे असहाय न रहें और स्वयं को संभाल सकें | महिला अधिकार के कानूनों की समुचित जानकारी दी जाए इस पर भी बल था | सभी ने लिखा था की अपनी संस्कृति से सामंजस्य बैठा कर नवीन का स्वागत करें |

कुछ एक प्रतियोगियों ने ही इस बात पर बल दिया की शुरू से ही बेटों को भी इस बात की शिक्षा दी जाए की स्त्री का सम्मान कैसे करना चाहिए जिस से सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं में कमी आये और समाज का संतुलन बना रहे | व्यवसाय से जोड़ने वाली प्रोफेशनल उच्च शिक्षा पर बल दिया तो सामाजिक सांस्कृतिक जुड़ाव पर भी सभी ने लिखा |

यद्यपि अधिकाँश लेख अच्छे लिखे गए थे, पर चयन प्रक्रिया के कुछ नियम होते हैं जिन्हे मानना चयन कर्ता का परम धर्म होता है | कुछ लेख शब्द सीमा में नहीं थे यानी या तो 600 शब्द या सीधे 1500 शब्द तक | कई निबंधों को बहुत ख़राब तरीके से टाइप किया हुआ था जो पढ़ने में ही नहीं आ रहा था | ऐसे कई कारणों से बहुत से लेख प्रतियोगिता से बाहर हुए |

कुल मिलाकर लेखों के विचार काफी तर्क संगत अपनाये जा सकने वाले और दिलचस्प थे | सभी समाज जनों को चिंतन मनन व अपने विचारों को लेखनी बद्ध करने के अवसर मिले इस दिशा में यह एक अच्छा प्रयास था |

सुलेखा समिति प्रभारी
मंजू मानधना

राष्ट्रीय सुलेखा समिति

सुलेखा समिति की प्रथम राष्ट्रीय स्तर की निबंध प्रतियोगिता " महिलाओं की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो " 15.03.2017 को निश्चित समयावधि में समाप्त हो गयी थी | हर्ष का विषय यह था कि सम्पूर्ण 27 प्रदेशों से तीन- तीन प्रस्तुतियाँ यानी कुल 81 निबंध आये थे | सभी प्रदेश अध्यक्ष, सचिव, पदाधिकारी गण व सदस्यों का उत्साह पूर्ण सहयोग राष्ट्रीय नेतृत्व एवं संगठन के प्रति विश्वास और आस्था का परिचायक रहा | राष्ट्रीय सुलेखा समिति इस सहयोग के लिए सभी का आभार प्रगट करती है | इस प्रतियोगिता के परिणाम निम्न लिखित रहे -

1. **प्रथम स्थान** - श्रीमती रमा भूतड़ा, आंध्र प्रदेश
2. **द्वितीय स्थान** - श्रीमती रमा साबू, मध्य मध्य प्रदेश
3. **तृतीया स्थान** - श्रीमती प्रेमलता मानधना, पश्चिमी राजस्थान

सान्त्वना पुरूस्कार-

1. श्रीमती सुनीता बिहानी, उत्तरी राजस्थान प्रदेश
2. श्रीमती ममता भट्टर, पूर्व मध्य प्रदेश
3. श्रीमती कृष्णा वी. कोठरी, पूर्वी उत्तर प्रदेश
4. श्रीमती सुषमा चांडक, मुंबई प्रदेश
5. श्रीमती अर्चना सारडा, नेपाल प्रदेश

द्वारा-

सुलेखा समिति प्रभारी- मंजू मानधना

महिलाओं की शिक्षा का प्रारुप कैसा हो

|| प्रस्तावना ||

उच्च लक्ष्य की सीढ़ियों पर, प्रयासों की ज्योति जलायें ।
महिला के सम्पूर्ण विकास के लिये, सब मिल शिक्षा का नव दीप जलायें ।।

शिक्षा क्या होती है ? यह वह होती है जो किसी भी मानव को सही अर्थो में मनुष्य बनाती हैं । अच्छे बुरे का भेद सिखाती है । वह किसी को भी

असतोमा सद्गमय
तमसोमा ज्योतिर्गमय
मृत्योमा अमृतंगमय की अविरल यात्रा पर ले जाती है ।

महिलाओं पर व्यक्तिगत विकास के साथ साथ भावी पीढी का मार्गदर्शन करने की, समाज का निर्माण करने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है इसीलिये महिला शिक्षा के प्रारुप पर सभी का ध्यान आकर्षित करना एक सामयिक विषय है ।

जीवन एक कमल पुष्प की तरह होता है और उसका अनुपम सौंदर्य तभी होता है जब सभी पंखुडियाँ समान रुप से पल्लवित हों । महिलाओं की शिक्षा का प्रारुप भी ऐसा ही हो जो उनमें सम्पूर्ण सोलह कलाओं का विकास कर सके । शिक्षा केवल विद्यालय एवं शिक्षण संस्थानों तक सीमित नहीं की जा सकती है । वह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है ।

अब हम विभिन्न अवस्थाओं एवं विभिन्न गुणों के अनुसार महिलाओं की शिक्षा पर प्रकाश डालेंगे ।

गर्भावस्था से शिक्षा : शिशु (बालक.बालिका) की प्रथम गुरु माता होती है । और गर्भावस्था के समय माता को सही मार्गदर्शन देकर शिक्षा का शुभारम्भ किया जा सकता है । हमारे यहाँ धार्मिक ग्रंथों के पठन एवं श्रवण की सदैव अनुकरणीया एवं अतुलनीय परम्परा रही है जो मानवीय गुणों की नींव की सुदृढ करती है । साथ ही सुमधुर शास्त्रीय संगीत एवं शिशु के साथ सकारात्मक बातचीत शिक्षा का प्रभावी माध्यम हो सकती है ।

बालपन में शिक्षा : बाल्यकाल में बुद्धि तीक्ष्ण होती है एवं ग्रहण करने की शक्ति चरम पर । एक शोध के अनुसार इस समय जितनी भी भाषाएँ सिखाई जायें वह सीख सकती है । उन्हें धार्मिक श्लोक इत्यादि सीखा कर धर्म से परिचय कराया जा सकता है । कथा कहानियों से जीवन की सीख दी जा सकती है । खेल विद्यालय या घर में विभिन्न खिलौनों द्वारा उनकी तार्किक एवं बौधिक बुद्धि का विकास खेल खेल में किया जा सकता है ।

खेल एवं नर्सरी पाठशाला : यह समव्यस्क, हम उम्र बालिकाओं से जुड़ने का छात्राओं का पहला अवसर होता है। इसमें सामाजिक एवं सहयोग की भसावना का विकास किया जाना चाहिये।

पाठशाला में शिक्षा : प्रथम से आठवी कक्षा तक विद्यालय का समय सुबह ७.०० बजे से मध्यान्ह २.०० बजे तक हो। शिक्षा पुस्तकों के साथ साथ व्यवाहारिक प्रोजेक्टस् द्वारा दी जाये। पाठशाला में योग एवं आत्म रक्षा जैसे जुड़ो कराटे जैसी महत्वपूर्ण विद्याओं को भी महत्व दिया जाये। दैनिक प्रशिक्षण दिया जाये एवं सभी के लिये अनिवार्य विषय बनाया जाये। पढाई मध्यान्ह तक पूर्ण होने से लाभ यह होगा कि छात्राएँ विभिन्न कलाओं से जुड सकती है। जैसे महाराष्ट्र में देखा जा सकता है।

शिक्षा का प्रारुप कक्षा ९ से १२ तक : यह अनवरत, बिना थके परिश्रम करने का समय होना चाहिये। इस समय वह अपना सम्पूर्ण ध्यान प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी पर केन्द्रित करें। उन्हें प्रमुख विषय जैसे विज्ञान, गणित, वाणिज्य, कला आदि पर विस्तार से शिक्षा दी जाये। कम्प्यूटर पर भी ध्यान दे। इस प्रकार वह व्यवसायिक रुप से आत्म निर्भरता की ओर अपने कदम बढा सकती है। बाल्यकाल में कला से जुड़ने के कारण वह किसी कला को भी अपनी आर्थिक आत्म निर्भरता के लिये अपना सकती है। इस तरह वह अपनी रुचि अनुसार सही निर्णय लेने में सक्षम होगी।

व्यवसायिक शिक्षा का प्रारुप : आज की व्यवस्था में कुछ फेर बदल अति आवश्यक हैं। सबसे प्रथम तो जातिगत आरक्षण को हटाना चाहिये और न ही महिला आरक्षण की आवश्यकता है। आज वह किसी से भी कम नहीं है।

कालेज में प्रवेश के बाद उन्हें पाठ्यक्रम दिये जायें, इन ही विषय पर अलग अलग अध्यापक कक्षायें लें, परन्तु मात्र निर्णय ले कि कौन से प्राध्यापक से वह विषय की जानकारी लेना चाहता है। परीक्षा की दिनांक भी वह चुने जैसे GRE इत्यादि में होता है। ऐसी व्यवस्था (प्राध्यापक चयन की) आज BITS, Pilani में है। इससे जो तीक्ष्ण बुद्धि छात्रायें हैं उनका समय व्यर्थ नहीं होता उन्हें परीक्षा के लिये पूरी कक्षा की प्रतीक्षा नहीं करनी पडती है वह अपने विषय पूरे करते जाते है एवं आगे बढते जाते हैं। इससे छात्राएँ जीवन में समय प्रबन्धन, परिश्रम के महत्व के साथ साथ अनुशासन का पाठ भी सीखती हैं। कहा गया है "स्वयं पर अनुशासन कीजिये तभी आप आने वाले कल पर शासन कर सकेंगे"।

विकसित देशों के इस प्रारुप को हमारे देश में भी अपनाना चाहिये। कुछ अन्य विषयों के समावेश के बिना महिला शिक्षा का प्रारुप अधूरा होगा।

खेलकूद : पढाई के साथ साथ एवं अवकाश में भी खेलकूद के प्रति उनकी रुचि को बढाना चाहिये, खेलकूद बालिकाओं को जीत की खुशी के साथ साथ बिना निराशा या अवसाद के हँसते हुए पराजय का सामना करने का महत्वपूर्ण पाठ भी सिखाते है। स्वास्थ्य एवं सार्वांगीण विकास की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। खेलकूद महिलाओं को अंतराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिला सकता है और हमारे देश में कई सिंधू एवं साक्षी जैसी प्रतिभाएँ उभर सकती हैं।

वित्तीय शिक्षा : बचपन से ही बडों के संरक्षण में बालिकाओं को एक निश्चित धन राशि दी जाये जिससे उनमें सही रूप से खर्च करने, बचत करने एवं संभालने की समझ को विकसित किया जाये। इस प्रकार वह वित्तीय प्रबंधन भी सीख सकती हैं।

अधिकारों की शिक्षा : विश्व विद्यालयों में, महिला संगठनों में, संचार माध्यमों द्वारा प्रमुख वक्ताओं, अधिकार विशेषज्ञों के समावेशों का भी प्रबंध किया जाना चाहिये। ताकि महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति सजग हो। उनका शोषण न हो महिलाओं को भी अपनी ओर से भी अपने अधिकारों के लिये चेष्टा करनी होगी।

"ख्वाहिशों से नहीं गिरते फूल झोली में
कर्म की शाख को हिलाना होगा
कुछ नहीं होगा कोसने से अंधेरे को
अपने हिस्से का दिया खुद ही जलाना होगा"

<u>समाज से जुडाव</u> : सामाजिक संस्थाएँ, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संगठन, महिला संगठन, छात्राओं को विभिन्न सेवा कार्यों जैसे असाध्य रोगों के जागरुकता अभियान, वृद्धाश्रम, अनाथाश्रम, मानसिक रूप से अविकसित बच्चों से जुडाव, अकेलेपन की त्रासदी झेलते वृद्ध दंपतियो को सहयोग जैसे कार्यों के लिये प्रोत्साहन शिक्षा का अभिन्न अंग बने। संस्थाएँ इन कार्यो के लिये उन्हें प्रमाण पत्र दे जो उनके बायोडेटा का महत्वपूर्ण अंग बने एवं व्यवसायिक एवं शैक्षाणिक उन्नति के लिये इन प्रमाण पत्रों को अनिवार्य माना जाये।

"गुण नहीं तो रूप व्यर्थ है
नम्रता नहीं तो विद्या व्यर्थ है
परोपकार न करने वाले का तो
मानव जीवन व्यर्थ है"

आशा है अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल इस राह पर पहले से चल रहा है और इसे नये शिखर पर ले जायेगा।

धर्म, संस्कृति, पारिवारिक शिक्षा एवं उपसंहार

आज की शैक्षणिक व्यवस्था आर्थिक रूप से महिलाओं को सक्षम बना रही है यह हम सर्वत्र देख रहे हैं किंतु इसके परिणाम स्वरूप जो पारिवारिक विघटन हो रहे हैं उसे रोकने के लिये धर्म, संस्कृति एवं पारिवारिक एकता की शिक्षा देना अति आवश्यक है। जो उन्हें माता पिता एवं परिवार के सदस्य अपने आचरण, आपसी सांमजस्य के उदाहरण से ही दे सकते है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये पारिवारिक शिक्षा के इस पक्ष में नये आयाम जोडे जाएँ। महिलाओं की शिक्षा का प्रारूप तभी सही

होगा जब पुरुषों की शिक्षा के प्रारुप पर भी ध्यान दिया जायेगा। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं, परिवार एवं जीवन को परिपूर्ण करते हैं। पुरुष को भी बचपन से नारी का सम्मान, परिवार में सहयोग, घरेलु कार्यों में भागीदारी का प्रशिक्षण दिया जाये। परिवार में पुत्र एवं पुत्री को बिना भेद भाव के सिखाया जाये। तभी नारी की शिक्षा उसकी उपलब्धियाँ परिवार में खुशहाली ला सकेगी, वास्तविक प्रसन्नता के साथ एक सशक्त एवं खुशहाल समाज के निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

"चलो आओ बुने मिलकर सुनहरे रेश्मी सपने
कुछ आकाश में उडने के सपने, तो कुछ धरती से जुडे सपने।
वो सपने देखकर जीवन में जिनसे रंग भर जाये
हमारी शिक्षा के सपने, हमारे सम्मान, सुरक्षा और प्यार के सपने ।।"

बदलता परिवेश प्रगति की निशानी है, समाज से बुराईयाँ हटाकर अच्छाईयाँ अपनानी है।

शिक्षा ऐसी हो जिससे सर्वांगीण विकास हो। हर चुनौती वह पार करे, सुरक्षा के लिये रहे न किसी पर निर्भर पर प्रेम की निर्झरणी बनी रहे। संवेदनशीलता व संस्कृति का पाठ भी पढती रहें । सही गलत का भेद वह समझे आर्थिक रूप से अपने पैरों पर खडी रहें। उसे स्पर्धा सभी से करती है तो प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में भी कमी न करें। लक्ष्य रखें सदैव समक्ष खडी रहे पुरुष के समकक्ष, न पीछे हटे न छूटे धैर्य, अपने अधिकारों के प्रति सजग रहे। अंत में यही कहना चाहूँगी महिला शिक्षा का प्रारूप हो ऐसा

"मन में दृढ निश्चय की ध्वनि हो
लक्ष्य समर्पित प्रखर अग्नि हो
नील गगन में जैसे रवि हो
नारी की ऐसी उत्कट छवि हो"

रमा भूतडा.....

Rama Bhutada
11-188, Old Beat Bazar
I B Chowrastha,
Mancherial-504208
Ph. No. 9246948987
9440061161

20/20

बात है राज की कुछ खोली है जिंदगी की,
सच में शिक्षा व उसका स्वरूप है सभी बहन सरीखी।

Dr. [signature] 2/8/12

महिलाओं की शिक्षा का स्वरूप कैसा हो?

स्वतंत्रता के बाद सरकार, महिला संगठनों, महिला आयोगों आदि के प्रयासों से महिलाओं के लिए विकास के द्वार खुले, उनमें शिक्षा का प्रसार बढा जिससे उनमें जाग्रति आई, आत्मविश्वास उत्पन्न हुआ, परिणामस्वरूप वे प्रगति पथ पर आगे बढी। आज महिलाएँ राजनीति, समाजसुधार, शिक्षा, पत्रकारिता, साहित्य, विज्ञान, उद्योग, व्यावसायिक प्रबन्धन, शासन–प्रशासन, चिकित्सा,पुलिस, सेना, कला, संगीत, खेलकूद आदि क्षेत्रों में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य कर रही है। एक और यह परिदृश्य अत्यधिक उत्साहवर्धक है, परन्तु वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य पर दृष्टि डालने से पता चलता है कि आज भी शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति संतोषजनक नहीं है। आज लड़कियों को स्नातक या स्नातकोत्तर कराने के बाद उसकी शादी कर देते है, ये नहीं सोचते कि आगे चलकर क्या करेंगी। बचपन से ही उनकी शिक्षा को कोई उद्देश्य नहीं होता है। इसलिए आवश्यकता है समाज को स्त्री शिक्षा के बारे में सोचने की कि स्त्रियों की शिक्षा रचनात्मक ढंग से होनी चाहिए, जिससे वे आत्मनिर्भर बन जायेगी, समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढेगी और समाज की भी प्रगति होगी।

- **महिलाओं की शिक्षा का भावी स्वरूप**– हमारे देश में महिलाओं को पुरूषों के साथ सामाजिक और आर्थिक जिम्मेदारियाँ भी निभानी पड़ती है। इसलिए महिलाओं की शिक्षा की ऐसी योजना बनाई जाए कि वे घर और बच्चों के उत्तरदायित्व को निभाने के साथ–साथ उनके लीवन को भी सफल बनाने में सहायक हो। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए वर्तमान शिक्षा पद्धति में कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता है।
- **जीवनोपयोगी शिक्षा का समावेष किया जाए**– जिस प्रकार पुरूषों के लिए जीवन की समस्याओं को हल करने वाली शिक्षा की जरूरत है, उसी प्रकार महिलाओं को भी वह शिक्षा चाहिए, जिसे प्राप्त कर वह अपना, अपने परिवार का, बच्चों का जीवन प्रसन्नता, सद्भावना, सम्पन्नता, निरोगता एवं सुखशान्ति से परिपूर्ण बना सके। महिलाओं की शिक्षा में ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए, जो उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का हल खोजने में सहायक हो सके।
- **अभिव्यक्ति क्षमता को विकसित किया जाये**– महिलाओं को शिक्षा प्रदान करते समय यह देखना होगा किवे अपने विचारों को ठीक प्रकार से अभिव्यक्त कर पाती है या नहीं? उनकी अभिव्यक्ति क्षमता को बढाने का प्रयत्न करना होगा। उनकी विवेक बुद्धि को उपयुक्त वाणी मिले, इसके लिए शिक्षकों को प्रयास करना होगा। उन्हें इस बात के लिए प्रोत्साहित करना होगा कि वे जब बोले तो उनके शब्दों में उनके विचार और उनकी भावनाएँ समुचित रीति से प्रतिबिम्बित हों।
- **व्यक्तित्व विकास की शिक्षा दी जाये**–स्त्री का आत्मविश्वास और स्वाभिमान लौटाया जाय, उसे स्त्रीत्व और सतीत्व के स्तर से ऊपर उठकर सच्चे अर्थों में मानवीय दर्जा हासिल करने में सक्षम बनाया जाए, साथ ही उसे व्यक्तित्व विकास का ऐसा पाठ पढाया जाए, जिससे वह स्वाभिमानी तो बने, लेकिन अंहकारी नहीं। उनका व्यक्तित्व इस तरह से गढा जाए कि वह समाज और परिवार के प्रति जिम्मेदार बने।
- **भारतीय संस्कृति की शिक्षा दी जाये**– नारी शिक्षा को पाश्चात्य चकाचौंध से बचाने की आवश्यकता है। भारतीय भाषा और संस्कृति स्वर्णतुल्य है, यह समझाने का प्रयास शिक्षकों को करना होगा। शिक्षा के माध्यम से उन्हें अपनी भारतीय परम्पराओं की जानकारी मिलनी चाहिए। नारी को ऐसी

शिक्षा मिलनी चाहिए, जिससे वह जीवन मूल्यों की हिफाजत कर सके और विकृतियों और विडंबनाओं से समाज को छुटकारा दिला सके।

- **अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम चालाया जाये–** ऐसी महिलाएँ जिनकी स्कूली शिक्षा पूरी नहीं हो पाई है या जो ऐसे स्थानों पर रहती है जहाँ स्कूल नहीं है, या जो काम में लगी हुई है और दिन के समय स्कूल नहीं जा सकती है, उन सभी के लिए अनौपचारिक शिक्षा का कार्यक्रम चालाया जायें। अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए आधुनिक तकनीकी उपकरणों की सहायता ली जाये।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाय–** महिलाओं के लिए माध्यमिक ओर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम शुरू किए जाएं, ताकि महिलाओ को आत्मनिर्भर बनाया जा सके। इसमें माध्यमिक स्कूल के बाद स्कूल छोडने वाली छात्राओं को विशेष रूप से अवसर दिया जाना चाहिए। स्थानीय स्तर पर नौकरी और व्यवसाय की संभावना को देखकर पाठ्यक्रमों में बदलाव किया जाना चाहिए।
- **महिलाओं की शिक्षा में किये जाने वाले पाठ्यक्रम संबंधी सुधार–** महिलाओं के लिए ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करनी चाहिए, जो स्कूली शिक्षा के साथ–साथ उनकी सभ्यता और संस्कृति से जुडी हुई हो तथा उस शिक्षा के द्वारा वे अपने पैरों पर खडे हो सके। इसलिए महिलाओं की शिक्षा के लिए पाठ्यक्रमों में कुछ सुधार की आवश्यकता है–

1. महिला शिक्षा पाठ्यक्रमों का उद्देश्य व्यावसायिक निपुणता देना ही नहीं हो ना चाहिए, परन्तु कला अथवा हस्तकला भी पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग होना चाहिए। महिलाओं की अभिरूचियों के विकास के लिए संगीत,चित्रकला,नृत्य, गृहविज्ञान आदि विषयों की पढाई का उचित प्रबंध किया जाना चाहिए।
2. महिलाओं के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, घरेलू अर्थ प्रबंध, वस्त्रों की सिलाई,रंगाई, गृह–व्यवस्था,पुस्तकालय,सांख्यिकी,बागवानी आदि पाठ्यक्रम शुरू किये जाने चाहिए, जो खासतौर से महिलाओं के लिए ही तैयार किए गए हों। इन नये प्रशिक्षणों को युक्तिसंगत ढंग से मानविकी,विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रमों के साथ जोड़ा जाना चाहिए। अपने परिवार का, बच्चों का जीवन प्रसन्नता, सद्भावना,सम्पन्नता निरोगता एवं सुख शान्ति से परिपूर्ण बना सके। महिलाओं की शिक्षा में ऐसे विषयों का समावेश किया जाना चाहिए, जो उनके जीवन में आने वाली समस्याओं का हल खोजने में सहायक हो सकें।
3. पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की छबि को अधिक सकारात्मक रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए। महिलाओं के प्रिय त्यौहार, खेल ओर महान नारियों की जीवनियाँ आदि पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित की जानी चाहिए। भाषा और सामाजिक अध्ययन की पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं की आवश्यकताओं, अनुभवों और समस्याओं का ध्यान रखा जाना चाहिए।
4. पाठ्यपुस्तकों में ऐसी आधाभूत सूचनाएँ दी जानी चाहिए, जिनमें बच्चों महिलाओं के लिए संरक्षात्मक कानून की जानकारी हो तथा संविधान से उनके उदाहरण दिए जाऐं, ताकि वे उसमें निहित सभी अधिकारों और अन्य बुनियादी संकल्पनाओं से परिचित हो सके।
5. वयस्क महिलाओं के लिए संक्षिप्त पाठ्यक्रम की व्यवस्था की जाए। यह व्यवस्था विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में की जाये। चूँकि महिलाओं के ऊपर घर की कई तहर की जिम्मेदारियाँ होती है, इसलिए उनकी शिक्षा के लिए कक्षाएँ उपयुक्त समय पर लगाई जाये।

9. महिलाओं को विशेषकर के भारतीय संविधान के विधि कानून कि विभिन्न धाराओं का परिचय मिल सके ऐसी शिक्षा का पाठ्यक्रम तैयार करके ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा जाना चाहिये। जिससे ग्रामीण महिलायें भी अपने ऊपर हो रहे शोषण के खिलाफ इस विधि का सहारा लेकर अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकेंगी।

6. माध्यमिक शिक्षा के बाद विस्तृत व्यावसायिक पाठ्यक्रम होने चाहिए। महिलाओं का व्यावसायिक योग्यता देने के उद्देश्य से इन्हें साधारण शिक्षा के साथ अलग से प्रारंभ किया जाना चाहिए। इनमें इतनी विभिन्नता होनी चाहिए कि वे महिलाओं की आवश्यकताओं को पूरा कर सके।
7. गणित और विज्ञान विषय महत्वपूर्ण है। इनके ही द्वारा विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने में पर्याप्त सुविधा मिलती है। अतः जो महिलाएँ गणित और विज्ञान विषय पढती है, उन्हें विशेष प्रोत्साहन मिलना चाहिए।
8. विश्वविद्यालय शिक्षा के बाद विविध व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जाए, जिससे महिलाएँ अधिक से अधिक व्यवसायों में उत्तदायित्व और प्रबंधकों के पद का भार संभाल सके।

उम्मीद करती हूँ कि सरकार और समाज महिला शिक्षा को महत्वपूर्ण समझकर इस संदर्भ में कोई प्रयास अवश्य करेगें। क्योंकि एक महिला सिर्फ एक महिला ही न होकर एक बेटी, एक वहन, एक बहू,एक माँ, एक सास भी होती है, अर्थात् एक महिला को शिक्षित करके आप इतने सारे रूपों में उसे सम्पूर्णता प्रदान करेंगें।

रमा साबू
98931-51888

Rama Saboo
203, Sai Sagar Apartment, 24-25, Silver Oaks Colony,
Anapurna Road, Indore 452 009
Phone: 0731-2483840 Mobile: 98931 51888

महिलाओ की शिक्षा का स्वरुप कैसा हो

''स्त्री शिक्षा''स्त्री और शिक्षा को अनिवार्य रूप से जोड़ने वाली अवधारणा है। इसका एक रूप शिक्षा में स्त्रियों को पुरूषों की तरह शामिल करने से सम्बन्धित है। दूसरे रूप में यह स्त्रियों के लिए बनाई गई विशेष शिक्षा पद्धति को संदर्भित करता है। भारत में मध्य और पुनर्जागरण काल के दौरान स्त्रियों को पुरूषों से अलग तरह की शिक्षा देने की धारणा विकसित हुई थी। वर्तमान दौर में यह बात सर्वमान्य है की स्त्री को भी उतना शिक्षित होना चाहिये जितना कि पुरूष हो। यह सिद्ध सत्य है कि यदि माता शिक्षित न होगी तो देश की सन्तानों का कदापि कल्याण नहीं हो सकता।

गांधीजी ने कहा था कि एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की उपेक्षा अधिक महत्पूर्ण है क्यांकि लड़के को शिक्षित करने पर वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है। समाज द्वारा पुरूष को शिक्षित करने को लाभ केवल पुरूष को होता है। जबकि महिला शिक्षा का स्पष्ट लाभ परिवार, समाज एवं सम्पूर्ण राष्ट्र को होता है।

इस सन्दर्भ में युगनायक एवं राष्ट्रनिर्माता स्वामी विवेकानन्द का यह कथन उल्लेखनीय है - ''किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर है, वहाँ की महिलाओं की स्थिति। हमें नारियों को ऐसी स्थिति में पहूंचा देना चाहिए जहाँ वे अपनी समस्याओं को अपने ढंग से स्वयं सुलझा सकें। हमें नारी शक्ति के उद्धारक नहीं, वरन् उनके सेवक और सहायक बनना चाहिए। भारतीय नारियाँ संसार की अन्य किन्हीं भी नारियों की भाँति अपनी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखती हैं। आवश्यकता है उन्हें उपयुक्त अवसर देने की। इसी आधार पर भारत के उज्जवल भविष्य की संभावनाएँ सन्निहित हैं।''

अशिक्षा की शिकार नारी अनेकानेक पूर्वाग्रहों, अन्धविश्वास, रूढ़ियों, कुसंस्कारों से व्यस्त होकर अपनी अधिकारों से वंचित हो जाती है। अगर नारी शिक्षित होकर एक कुशल इंजीनियर, लेखिका, वकील, डॉक्टर बन भी जाती है, तो भी कई बार पति व समाज द्वारा ईर्ष्यावश उसका शैक्षणिक शोषण किया जाता है। परिणामस्वरूप नारी को शिक्षित होते हुए भी पति का अविश्वास झेलकर आर्थिक, मानसिक व दैहिक रूप से उत्पीड़ित होना पड़ता है।

प्राचीन काल से ही नारी के प्रति समाज का दृष्टिकोण रहा है, ''नारियों के लिए पढ़ने की क्या जरूरत, उन्हें कोई नौकरी-चाकरी तो करनी नहीं, न किसी घर की मालकिन बनना है, उसके लिए तो घर 'गृहस्थी' का काम सीख लेना ही पर्याप्त है। एक तरह से समाज की यह विचारधारा ही शैक्षणिक शोषण के आधार को और भी मजबूत कर देती है।

शिक्षा प्राप्त करके आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होने का अर्थ यह नहीं है कि नारी शिक्षित होकर पुरूष को अपना प्रतिद्वन्दी मानते हुए उसके सामने ही मोर्चा लेकर खड़ी हो जाए। बल्कि वह आर्थिक क्षेत्र में भी पुरूष के बराबर समानता का अधिकार प्राप्त करके उसके साथ मैत्री पूर्ण सम्बन्ध के समीकरण बनाने में सक्षम बनें। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है। अगर नारी ही शिक्षित नहीं होगी तो वह न तो सफल गृहिणी बन सकेगी और न कुशल

माता। समाज में बाल-अपराध बढ़ने का कारण बालक का मानसिक रूप से विकसित न होना है। अगर एक माँ ही अशिक्षित होगी तो वह अपने बच्चों को सहीं मार्गदर्शन करके उनका मानसिक विकास कैसे पर पाएगी और एक स्वस्थ समाज का निर्माण एवं विकास सम्भव नहीं हो सकेगा।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं को सिर्फ साक्षर ही नहीं, अपितु 'शिक्षित' किये जाने की आवश्यकता है। इसके लिए उनकी शिक्षा के स्वरूप में निम्नलिखित बिन्दुओं का समावेश समीचीन होगा :-

1. **आत्मनिर्भरता** :- परनिर्भरता, परतन्त्रता की ओर ले जाती है, वहीं आत्मनिर्भरता, आत्मसम्मान को जगाती है। महिला शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जो उन्हें आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बना सके। परिवार पर किसी आकस्मिकता अथवा तंगहाली की स्थिति में महिला भी गृहस्थी की गाड़ी में बराबर का पहिया बन सके, ऐसी तैयारी जरूरी है। एक शिक्षित महिला स्वरोजगार भी कर सके और कहीं उपयुक्त नौकरी भी हासिल कर सके, इतनी योग्यता तो शिक्षा-स्वरूप में निहित होना नितान्त अनिवार्य है।

2. **अभिरुचि शिक्षण** :- महिलाओं को पारंपरिक शिक्षण देने की बजाय उनके बाल्यकाल/किशोरावस्था से ही उनकी अभिरूचियों एवम् हुनर को पहचानकर उसी अनुरूप उन्हें इस क्षेत्र का विशेष प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। कौन जाने संगीत में निपुण कोई महिला लता मंगेशकर बन जाए, नृत्यकला में पारंगत कोई महिला मल्लिका साराभाई बन जाए, लेखनी की शक्ति से कोई अरूधंतिरॉय बन जाए, अर्थशास्त्र में रूचि लेकर कोई चन्दा कोचर बन जाए अथवा ऐश्वर्या राय बनकर कोई विश्व पटल पर भारतीय सौंदर्य की पताका फहराए।

3. **तकनीकी समृद्धि** :- आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में 'गांवों की चौपाल' का स्थान tweeter ने ले लिया है। "Face to Face" का स्थान "Face Book" ने ले लिया है एवं ''और क्या चल रहा है'' का स्थान "Whats App" ने ले लिया है। ऐसे में आज की महिला को ऐसा शिक्षण-प्रशिक्षण दिया जाना अनिवार्य है जो उन्हें नए यांत्रिकी-अभियांत्रिकी बदलावों से up-to-date रखें। उन्हें कम्प्यूटर, लेपटॉप और मोबाइल चलाना भी उनकी शिक्षा प्रणाली में ही सिखाया जाना जरूरी है। साथ ही जिस प्रकार वाहन चलाना सिखाते समय यह भी बताया जाता है कि उचित सुरक्षा मापदण्ड़ो का पालन भी जरूरी है, उसी प्रकार तकनीकी ज्ञान व Social Media का ज्ञान देते समय ही यह भी बताया जाना चाहिए कि इन साधनों को सुरक्षित रूप से कैसे चलाया जाए ताकि नैतिकता एवम् मर्यादा की सीमाओं का उल्लंघन कतई ना हो और कोई भी तकनीकी शक्ति को कमजोरी बनाकर उसका दुरूपयोग न कर बैठे।

4. **स्वास्थ्य शिक्षा** :- ''स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिक का निर्माण संभव है।'' महिलाओं के शिक्षण में स्वास्थ्य शिक्षा का अनिवार्य समावेश होना जरूरी है, ताकि वे न केवल स्वयं को चुस्त दुरूस्त रख सके, अपितु अपने बच्चों व परिवाजनों के उत्तम स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रह सके। स्वस्थ

परिवार मिलकर ही स्वस्थ समाज व स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकेंगे। इसके लिए शिक्षण पाठ्यक्रम में योग-प्राणायाम, पंचकर्म चिकित्सा एवम् रसोईघर औषधि के प्राचीन उपक्रमों के साथ ही नवीन चिकित्सा प्रणालियों की सतही जानकारी भी दी जानी जरूरी है। घर में अशक्त/वृद्धजनों की सेवा कैसे की जाए इसका भी व्यवहारिक ज्ञान देना चाहिए। खेलकूद में भाग लेने के लिए बालिकाओं को भी बालक के समान ही प्रोत्साहित एवम् प्रेरित किया जाना आवश्यक है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि जब मूलभूत सुविधाओं के अभाव के बावजूद देश में मैरीकॉम, गीता-बबीता फोगाट, पी. वी. सिन्धु और दीपा कर्माकर जैसी प्रतिभाऐं देश का परचम लहरा सकती है तो उचित शिक्षण-प्रशिक्षण पाकर हमारे देश की महिलाएं बल-बुद्धि-विद्या की सभी प्रतिस्पर्धाओं में अग्रणी रह सकती है।

5. आत्मरक्षा प्रशिक्षण :- 'निर्भया काण्ड' ने हर उस परिवार को भयाक्रान्त कर डाला, जिस परिवार में बेटी है, बहू है, बहिन है, माँ है या मातृशक्ति है। ''या देवी सर्वभूतेषू शक्तिरूपेण संस्थिता'' की पौराणिक उक्ति को मूर्तरूप में लाने के लिए और नारी की शक्ति स्वरूपा को जगाने के लिए आवश्यक है कि जूडो-कराटे, ताइक्वान्डो, मल्लयुद्ध, कुश्ती जैसी क्रीडाऐं अनिवार्यतः उपके पाठ्यक्रम में सम्मिलित की जाएं।

इतिहास गवाह है कि स्त्री को ''कोमलांगी'' मानकर सदैव उसे शारीरिक रूप से प्रताड़ित किया जाता रहा है। शारीरिक यंत्रणाएं कब मानसिक वेदना का नासूर बन जाती है, यह परिवार और समाज कभी समझ ही नहीं पाता। अतः ''कोमल है, कमजोर नहीं'' की भावना कूट-कूट कर भरने पर ही महिलाऐं शारीरिक रूप से सुदृढ़ व मानसिक रूप से सशक्त बनकर एक सुरक्षित व मर्यादित समाज की नींव रख सकेगी।

6. गृह कार्य प्रवीणता :- महिलाओं की शिक्षा के "Side Effects"" के रूप में यह देखने में आता है कि जो बच्च्यां पढ़ाई-लिखाई में ज्यादा ध्यान देती है, वे गृह कार्यों में उतनी प्रवीण नहीं रह जाती। आज की शिक्षा प्रणाली में सिर्फ अच्छे अंको को ही दक्षता का द्योतक मान लिया गया है, जबकि महिला शिक्षा को अपने उस मूल उद्देश्य से कदापि नहीं भटकना चाहिए कि अधिकांश महिलाओं की असली कार्यस्थली उनका घर होती है। पढ़ाई का अर्थ सिर्फ यह ना समझा जाए की नौकरी हेतु कौशल अर्जित करना है, अपितु पढ़ाई में इस हुनर का भी समावेश हो कि जो किशोरियां कल की महिला बनकर गृहस्थी का बोझ उठाने जा रही है, उन्हें पाककला, सफाई कला, सिलाई कला इत्यादि का भी प्रायोगिक ज्ञान होना आवश्यक है। यदि पेट के रास्ते दिल में जगह बनानी है तो विविध व्यंजनो का प्रशिक्षण जरूरी है एवम् यदि स्वच्छ भारत की अभिकल्पना करनी है तो स्वच्छ घर कैसे रखा जाए, इसका भी ज्ञान अपरिहार्य है।

7. देश और दुनिया की जानकारी :- आज की महिला को घूंघट व बुर्के की कूप मंडूकता से निकल कर देश और दुनिया में होने वाले विविध आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक व सामरिक गतिविधियों से भी रू-ब-रू रहने की आवश्यकता है, ताकि उनके होने वाले प्रभावों की विवेचना करके व अपने बच्चों व परिवार का उज्ज्वल भविष्य चुन सके।

8. राजनीतिक ज्ञान :– देश का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा यदि देश की आधी आबादी (महिला शक्ति) अपने मताधिकार का मतिपूर्ण सदुपयोग करें। जबकि वस्तुतः आज की शिक्षित महिलाऐं या तो वोट देने जाती ही नहीं, या फिर मतदान उन्हें ही करती है, जिन्हें उनके पति/घर के पुरूष सदस्य करने को कहते है। ऐसे में मतदान जैसी शक्ति का प्रयोग भी वे स्वेच्छा व स्वविवेक से ना करके मात्र कठपुतलियों की भांति करती है। अतः जरूरी है कि महिलाओं की शिक्षा प्रणाली में राजनीतिक ज्ञान एवं मताधिकार की सजगता का समावेश हो, ताकि बेहतर राष्ट्र निर्माण में महिलाओं की सक्रिय साझेदारी सुनिश्चित की जा सके।

9. सामाजिक सोद्देश्यता :– महिलाओं को इस प्रकार शिक्षित किया जाए कि वे स्वयं तो समाज के विकास हेतु योगदान दे ही, साथ ही अपने बच्चों को भी नैतिकता, मर्यादा, ईमानदारी व परिश्रम का ऐसा पाठ पढ़ाए कि वे बच्चे आगे चलकर एक सशक्त समाज के निर्माण में सहभागी हो सके।

उक्त ''नवरत्नों'' स्वरूप ''नव बिन्दुओं'' का समावेश महिलाओं की शिक्षा प्रणाली में किये जाने पर निश्चित रूप से न केवल वे स्वयं शारीरिक, आर्थिक व मानसिक तौर पर सुदृढ़ हो सकेगी, अपितु महिलाओं को उनका गौरवमयी स्थान परिवार–समाज–राष्ट्र में सुनिश्चित हो सकेगा तथा **''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते, रमन्ते तत्रदेवताः''** की सूक्ति चरितार्थ हो सकेगी।

धन्यवाद !

प्रेमलता मानधना
W/o श्री लक्ष्मीनारायण मानधना
4-B, आदर्श नगर, ''सागर''
पाली–मारवाड़ (राज.)
मोबाइल : 93149-25650

3rd
Seema Thawar
Abha Singh
(Principal)
Children Public School